**COHERENCE** – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 81-86
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

# विभूतिनारायण राय के उपन्यासों में शिल्प-विधान

**ज्योति कुमारी**
शोधार्थी
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

**सारांश–**

विभूतिनारायण राय हिन्दी के उन प्रमुख कथाकारों में से हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में वास्तविकता की कठोर जमीन पर खड़े होकर शिल्प का नवीन प्रयोग किया है। उनके उपन्यास 'घर', 'शहर में कर्फ्यू', 'किस्सा लोकतंत्र', 'तबादला' और 'प्रेम की भूत-कथा' शिल्प की दृष्टि से अत्यंत वैविध्यपूर्ण हैं। इस शोध-आलेख में उनके उपन्यासों में प्रयुक्त कथा-शिल्प के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें कथानक-संरचना, भाषा-शैली, पात्र-चित्रण, परिप्रेक्ष्य (दृष्टिकोण), समय-संरचना, संवाद-योजना तथा प्रतीकात्मकता को विस्तार से उजागर किया गया है। राय की शिल्प-चेतना उन्हें समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

**मुख्य शब्द–** शिल्प-विधान, कथा-तकनीक, विभूतिनारायण राय, संरचनावाद, समकालीन हिन्दी उपन्यास, यथार्थवाद।

## प्रस्तावना–

हिन्दी उपन्यास-परंपरा में विभूतिनारायण राय (जन्म: 1951) का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे न केवल एक सिद्धहस्त कथाकार हैं, अपितु पुलिस अधिकारी और प्रशासक के रूप में उनका वास्तविक जीवन-अनुभव उनकी रचनाओं में एक जीवंत प्रामाणिकता भरता है। उनके उपन्यासों में जो यथार्थ चित्रित होता है, वह किसी काल्पनिक भूमि का नहीं, बल्कि भारतीय समाज के उस क्रूर चेहरे का है जिसे साहित्य में प्रायः नज़रअंदाज़ किया जाता था।

शिल्प-विधान से तात्पर्य उन समस्त प्रविधियों और तकनीकों से है जिनके माध्यम से एक रचनाकार अपनी कथावस्तु को आकार देता है। कथानक की बुनावट, भाषा का चयन, पात्रों का निर्माण, दृष्टिकोण का निर्धारण, संवाद-योजना, समय-संरचना और प्रतीकों का विन्यास — ये सब मिलकर उपन्यास के शिल्प को निर्मित करते हैं। विभूतिनारायण राय इस दृष्टि से एक सचेत और प्रयोगशील कथाकार हैं।

प्रस्तुत शोध-आलेख में राय के पाँच प्रमुख उपन्यासों– 'घर' (1986), 'शहर में कर्फ्यू' (1988), 'तबादला' (1990), 'किस्सा लोकतंत्र' (1993), और 'प्रेम की भूत-कथा' (2001) — के शिल्प-पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

## कथानक-संरचना एवं कथावस्तु–

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों में कथानक की संरचना परंपरागत रैखिक (linear) प्रणाली से हटकर है। 'शहर में कर्फ्यू' में कथानक एक साथ कई धरातलों पर चलता है। सांप्रदायिक दंगे की पृष्ठभूमि में अनेक पात्रों की व्यक्तिगत कथाएँ एक साथ प्रवाहित होती हैं। यह बहुसूत्री कथानक-संरचना आधुनिक उपन्यास-शिल्प की विशेषता है जिसे राय ने पूरी दक्षता से अपनाया है।

'घर' उपन्यास में कथानक का विस्तार एक पारिवारिक संघर्ष के इर्द-गिर्द है, किन्तु उसकी शिल्प-संरचना में एकरेखीयता नहीं है। कथाकार बीच-बीच में फ्लैशबैक तकनीक का प्रयोग कर पात्रों के अतीत को वर्तमान में जोड़ता है, जिससे कथा में गहराई और वैविध्य आता है।

राय के प्रत्येक उपन्यास में एक केंद्रीय संघर्ष है जो कथानक को गतिशील बनाता है। 'किस्सा लोकतंत्र' में चुनावी भ्रष्टाचार और सत्ता-संघर्ष, 'तबादला' में नौकरशाही और राजनीतिक दबाव, 'शहर में कर्फ्यू'


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

में सांप्रदायिक हिंसा–ये सब केंद्रीय संघर्ष के रूप में कथा को संचालित करते हैं। इस प्रकार राय का शिल्प 'टकराव पर आधारित कहानी' की तकनीक पर आधारित है।

## भाषा-शैली–

विभूतिनारायण राय समकालीन हिन्दी उपन्यासकारों में अपनी विशिष्ट भाषा-शैली के कारण विशेष पहचान रखते हैं। उनकी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करने का एक सशक्त उपकरण है। उन्होंने साहित्यिक और कृत्रिम भाषा के स्थान पर जनजीवन से जुड़ी हुई सहज, स्वाभाविक और संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग किया है। यही कारण है कि उनके उपन्यास पाठकों के निकट प्रतीत होते हैं और उनमें चित्रित परिस्थितियाँ वास्तविक जीवन का प्रतिबिंब बनकर सामने आती हैं।

राय की भाषा का सबसे महत्वपूर्ण गुण उसकी बहुभाषिकता है। उनके उपन्यासों में हिन्दी के साथ-साथ उर्दू, अवधी, भोजपुरी तथा अन्य स्थानीय बोलियों के शब्दों और मुहावरों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। यह भाषिक विविधता केवल शैलीगत प्रयोग नहीं है, बल्कि पात्रों की सामाजिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पहचान को स्पष्ट करने का प्रभावी माध्यम भी है। विभिन्न वर्गों और समुदायों से जुड़े पात्र अपनी-अपनी भाषा में बोलते हैं, जिससे उनकी विश्वसनीयता और यथार्थपरकता बढ़ जाती है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शहर में कर्फ्यू' में भाषा का प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस उपन्यास में सांप्रदायिक तनाव और दंगों के वातावरण को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने विभिन्न वर्गों की भाषा को अत्यंत सटीकता के साथ चित्रित किया है। पुलिस प्रशासन की कठोर और आदेशात्मक भाषा, राजनीतिक नेताओं की अवसरवादी और प्रभावशाली भाषा तथा आम जनता की भावनात्मक और व्यावहारिक भाषा—इन तीनों स्तरों का संतुलित और यथार्थपरक प्रयोग उपन्यास को दस्तावेज़ी सत्यता प्रदान करता है। पाठक को ऐसा अनुभव होता है मानो वह किसी वास्तविक घटना का प्रत्यक्षदर्शी हो।

विभूतिनारायण राय की भाषा-शैली का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उनका व्यंग्य है। विशेष रूप से 'किस्सा लोकतंत्र' में उन्होंने लोकतांत्रिक व्यवस्था की विसंगतियों, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अवसरवादिता और प्रशासनिक विफलताओं को उजागर करने के लिए व्यंग्यात्मक शैली का प्रभावशाली उपयोग किया है। वे प्रत्यक्ष आलोचना करने के बजाय घटनाओं और पात्रों के माध्यम से ऐसी स्थितियाँ निर्मित करते हैं, जिनसे व्यवस्था की कमजोरियाँ स्वतः सामने आ जाती हैं। उनकी व्यंग्यात्मक भाषा में तीखापन होने के साथ-साथ गहरी सामाजिक चेतना भी निहित रहती है।

राय की शैली में विडंबना, विरोधाभास और दोहरे अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग भी उल्लेखनीय है। वे ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करते हैं जहाँ कथनी और करनी के बीच का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। पात्रों के व्यवहार, संवादों और सामाजिक घटनाओं के माध्यम से उत्पन्न यह विरोधाभास पाठक को सोचने और व्यवस्था पर प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित करता है। यही विशेषता उनकी रचनाओं को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहने देती, बल्कि उन्हें सामाजिक आलोचना का सशक्त माध्यम बना देती है।

## पात्र-चित्रण–

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों में पात्र किसी आदर्श के प्रतिनिधि नहीं हैं। वे मनुष्य की जटिलताओं, द्वंद्वों और कमज़ोरियों से युक्त जीवंत चरित्र हैं। 'घर' का नायक न पूरी तरह अच्छा है, न बुरा — वह उस मध्यवर्गीय मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है जो व्यवस्था में रहकर भी उसकी विकृतियों से संघर्ष करता है। यह यथार्थवादी पात्र-निर्माण राय के शिल्प को विश्वसनीयता देता है।

राय के उपन्यासों की एक विशेषता यह है कि उनमें 'भीड़' स्वयं एक चरित्र की तरह व्यवहार करती है। 'शहर में कर्फ्यू' में दंगाई भीड़ एक सामूहिक पात्र की तरह है जिसका अपना मनोविज्ञान है। यह सामूहिक चरित्र-निर्माण की तकनीक हिन्दी उपन्यास में दुर्लभ है और राय की शिल्प-दक्षता का प्रमाण


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

है। राय के उपन्यासों में नारी-पात्र परंपरागत सहायक भूमिकाओं से बाहर निकलकर स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। वे सामाजिक दबावों से लड़ने वाले, अपनी पहचान तलाशने वाले स्वायत्त चरित्र हैं। यह नारी-चेतना उनके शिल्प को प्रगतिशील आयाम देती है।

**कथा-दृष्टिकोण–**

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों का कथा-दृष्टिकोण उनके शिल्प-विधान का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। वे कथा को केवल घटनाओं के क्रमबद्ध वर्णन तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे विभिन्न पात्रों के अनुभवों, दृष्टियों और वैचारिक स्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इस कारण उनके उपन्यासों में जीवन और समाज का बहुआयामी तथा यथार्थपरक चित्र उभरकर सामने आता है। उनकी कथा-दृष्टि वस्तुनिष्ठ होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है।

राय के उपन्यासों की सबसे प्रमुख विशेषता बहुदृष्टिकोणीय कथन-पद्धति (Multiple Perspective Narrative Technique) है। विशेष रूप से 'शहर में कर्फ्यू' में यह तकनीक अत्यंत प्रभावशाली रूप में दिखाई देती है। इस उपन्यास में सांप्रदायिक दंगों जैसी जटिल सामाजिक घटना को किसी एक पात्र या वर्ग की दृष्टि से नहीं देखा गया है, बल्कि पुलिस अधिकारियों, राजनेताओं, आम नागरिकों और पीड़ित समुदायों के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। परिणामस्वरूप पाठक किसी एक निष्कर्ष पर पहुँचने के बजाय घटना के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए प्रेरित होता है। यह शिल्प उपन्यास को अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाता है। यहाँ लेखक स्वयं निर्णय नहीं थोपता, बल्कि विभिन्न स्वरों को समान महत्व देकर पाठक को स्वतंत्र विवेक से सोचने का अवसर देता है।

यह बहुस्वरात्मकता (Polyphony) आधुनिक उपन्यास-शास्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। रूसी चिंतक मिखाइल बाख्तिन ने दोस्तोव्स्की के उपन्यासों के संदर्भ में जिस 'पॉलीफोनी' की चर्चा की थी, उसका प्रभाव विभूतिनारायण राय के कथा-शिल्प में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में पात्र केवल लेखक के विचारों के वाहक नहीं हैं, बल्कि स्वतंत्र चेतना और वैचारिक पहचान रखते हैं। प्रत्येक पात्र अपनी सामाजिक स्थिति, अनुभव और मानसिकता के आधार पर घटनाओं की व्याख्या करता है। इस प्रकार उपन्यास में अनेक स्वरों का सह-अस्तित्व दिखाई देता है।

राय के उपन्यासों में तृतीय पुरुष कथन (Third Person Narration) का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है, किंतु वे इसे केवल बाह्य घटनाओं के वर्णन तक सीमित नहीं रखते। 'तबादला' और 'प्रेम की भूत-कथा' जैसे उपन्यासों में तृतीय पुरुष कथन के साथ-साथ आंतरिक एकालाप (Interior Monologue) और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की तकनीक का भी प्रभावी उपयोग किया गया है। इस तकनीक के माध्यम से पात्रों के मन में चल रहे विचार, संदेह, इच्छाएँ, भय और अंतर्द्वंद्व सीधे पाठक के सामने आते हैं। इससे पात्रों का मनोवैज्ञानिक पक्ष अधिक स्पष्ट और जीवंत बनता है।

विशेष रूप से 'प्रेम की भूत-कथा' में प्रेम, सामाजिक बंधनों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच उत्पन्न मानसिक संघर्ष को आंतरिक एकालाप के माध्यम से अत्यंत संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया गया है। वहीं 'तबादला' में एक ईमानदार अधिकारी की प्रशासनिक व्यवस्था से जूझती चेतना और उसके नैतिक द्वंद्व को इसी तकनीक के द्वारा प्रभावशाली रूप में उभारा गया है। यह शिल्प पाठक को पात्रों के बाहरी व्यवहार के साथ-साथ उनकी आंतरिक मानसिक दुनिया से भी जोड़ता है।

इस प्रकार विभूतिनारायण राय का कथा-दृष्टिकोण बहुस्वरात्मकता, तृतीय पुरुष कथन और आंतरिक एकालाप जैसी आधुनिक कथात्मक तकनीकों के सफल समन्वय का उदाहरण है। उनके उपन्यासों में कथा केवल घटनाओं का विवरण नहीं रहती, बल्कि विभिन्न दृष्टिकोणों, अनुभवों और संवेदनाओं का जीवंत संवाद बन जाती है। यही विशेषता उनके कथा-शिल्प को समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विशिष्ट और प्रभावशाली बनाती है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

**समय-संरचना–**

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों के शिल्प-विधान में समय-संरचना एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। उनके कथा-साहित्य में समय केवल घटनाओं के क्रम को आगे बढ़ाने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह पात्रों के मनोविज्ञान, सामाजिक यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना को उद्घाटित करने वाला सशक्त उपकरण भी है। राय पारंपरिक रैखिक समय-संरचना का अनुसरण नहीं करते, जहाँ घटनाएँ आरंभ से अंत तक क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। इसके विपरीत वे समय को बहुआयामी रूप में ग्रहण करते हैं और वर्तमान, अतीत तथा स्मृतियों को एक-दूसरे में इस प्रकार गूँथते हैं कि कथा अधिक यथार्थपरक और प्रभावशाली बन जाती है।

उनके उपन्यासों में अतीत की स्मृतियाँ केवल पृष्ठभूमि का कार्य नहीं करतीं, बल्कि वर्तमान घटनाओं को समझने की कुंजी बन जाती हैं। विशेष रूप से 'घर' उपन्यास में यह प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ पात्रों के वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के साथ-साथ उनके अतीत के अनुभव, संघर्ष और स्मृतियाँ बीच-बीच में उभरती रहती हैं। ये स्मृति-दृश्य पाठक को पात्रों की मानसिक संरचना, उनके व्यवहार और निर्णयों के पीछे छिपे कारणों को समझने में सहायता प्रदान करते हैं। इस प्रकार राय समय को केवल बाहरी घटनाओं की श्रृंखला न मानकर उसे मनुष्य की आंतरिक चेतना से जोड़ते हैं। उनकी यह तकनीक आधुनिक उपन्यास-कला में प्रचलित मनोवैज्ञानिक समय की अवधारणा के निकट है।

विभूतिनारायण राय की समय-संरचना की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे सीमित कथा-काल में व्यापक सामाजिक यथार्थ को समेटने की क्षमता रखते हैं। 'शहर में कर्फ्यू' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस उपन्यास की घटनाएँ कुछ ही दिनों के भीतर घटित होती हैं, किंतु इन कुछ दिनों में भारतीय समाज की सांप्रदायिकता, राजनीतिक स्वार्थ, प्रशासनिक निष्क्रियता और सामाजिक विघटन जैसी दीर्घकालिक समस्याओं का व्यापक चित्र उपस्थित हो जाता है। लेखक ने अल्प समयावधि को आधार बनाकर समाज की गहरी संरचनात्मक विकृतियों को उजागर किया है। इस दृष्टि से उनका समय-बोध केवल घटनात्मक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक भी है।

राय की समय-संरचना में वर्तमान और अतीत का संवाद निरंतर चलता रहता है। वर्तमान की कोई घटना पात्रों के अतीत को सक्रिय कर देती है और अतीत की स्मृति वर्तमान के अर्थ को बदल देती है। इससे कथा में गहराई और बहुस्तरीयता उत्पन्न होती है। पाठक केवल घटनाओं को नहीं पढ़ता, बल्कि उन घटनाओं के पीछे छिपे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों को भी समझता है। यह शिल्प पाठक को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है तथा उसे कथा के विभिन्न स्तरों पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि विभूतिनारायण राय की समय-संरचना आधुनिक कथाशिल्प की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वे रैखिक समय की सीमाओं को तोड़कर स्मृति, वर्तमान और इतिहास को एकीकृत करते हैं। सीमित कथा-काल में व्यापक सामाजिक यथार्थ की प्रस्तुति, मनोवैज्ञानिक समय का प्रभावी उपयोग तथा अतीत-वर्तमान के अंतर्संबंधों का सूक्ष्म चित्रण उनकी शिल्पगत दक्षता को प्रमाणित करता है। यही कारण है कि उनके उपन्यास केवल घटनाओं का विवरण नहीं रह जाते, बल्कि समय, समाज और मनुष्य के जटिल संबंधों का गहन कलात्मक दस्तावेज बन जाते हैं।

**संवाद-योजना–**

राय की संवाद-योजना उनके कथा-शिल्प का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। उनके संवाद स्वाभाविक, सजीव और पात्र के चरित्र को उजागर करने में सक्षम हैं। वे संवाद को केवल सूचना-प्रेषण का माध्यम नहीं मानते, बल्कि उसे चरित्र-निर्माण और वातावरण-निर्माण दोनों के लिए उपयोग करते हैं।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

'किस्सा लोकतंत्र' के नेताओं के संवाद में राजनीतिक भाषा की खोखलापन और दोमुँही नीति को इतनी सफाई से व्यक्त किया गया है कि पाठक सहज ही उस यथार्थ को पहचान लेता है। पुलिस-अधिकारियों और सामान्य जनता के बीच के संवाद में सत्ता और नागरिक के बीच की खाई स्पष्ट दिखती है।

### परिवेश-चित्रण और स्थान-शिल्प–

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों में स्थान केवल पृष्ठभूमि नहीं है, वह स्वयं एक चरित्र की भूमिका निभाता है। उत्तर प्रदेश के छोटे-बड़े शहर, सरकारी दफ्तर, पुलिस थाना, बाज़ार और मोहल्ले— ये सब राय की रचनाओं में जीवंत रूप से उपस्थित हैं।

'शहर में कर्फ्यू' में शहर का भूगोल कथा में इस तरह घुला-मिला है कि दंगे की भयावहता और भी प्रत्यक्ष हो जाती है। गलियाँ, चौराहे, मस्जिद, मंदिर — सभी इस कथा में स्थान से ऊपर उठकर सांकेतिक महत्त्व प्राप्त कर लेते हैं।

### प्रतीक और बिम्ब-विधान–

राय के उपन्यासों में प्रतीक और बिम्ब गहरे अर्थों को संप्रेषित करने का माध्यम हैं। 'घर' उपन्यास में 'घर' एक प्रतीक है– वह केवल इमारत नहीं, बल्कि मनुष्य की सुरक्षा, अपनापन और अस्तित्व का प्रतीक है। उसे लेकर होने वाला संघर्ष वास्तव में मनुष्य की पहचान और अस्मिता का संघर्ष है।

'शहर में कर्फ्यू' में कर्फ्यू एक ऐसा प्रतीक है जो राज्य-शक्ति, नागरिक-स्वतंत्रता और भय के बीच के संबंध को व्यक्त करता है। यह शब्द केवल सैन्य आदेश नहीं, बल्कि एक पूरी सामाजिक-राजनीतिक स्थिति का प्रतीक बन जाता है।

## निष्कर्ष

विभूतिनारायण राय के उपन्यासों का शिल्प-विधान हिन्दी कथा-साहित्य में एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। उनके उपन्यासों में कथानक की बहुस्तरीय संरचना, भाषा का जीवंत सामर्थ्य, बहुदृष्टिकोणीय कथन-पद्धति, सजीव पात्र-निर्माण, सटीक संवाद-योजना, परिवेश की सक्रिय भूमिका और प्रतीकों का सार्थक प्रयोग– ये सब मिलकर एक ऐसा शिल्प निर्मित करते हैं जो यथार्थ को उसकी जटिलता में प्रस्तुत करता है। वे न तो शिल्प के लिए शिल्प का प्रयोग करते हैं, और न ही केवल वस्तु-सत्य पर निर्भर रहते हैं। उनके यहाँ शिल्प और वस्तु का संतुलन अद्‌भुत है। यही कारण है कि उनके उपन्यास पाठकों को एक साथ साहित्यिक आनंद और सामाजिक वास्तविकता का बोध दोनों प्रदान करते हैं। विभूतिनारायण राय का शिल्प-विधान हिन्दी उपन्यास की परंपरा में एक नई दिशा का संकेत देता है — एक ऐसी दिशा जिसमें यथार्थवाद केवल विषय-वस्तु तक सीमित नहीं, बल्कि शिल्प के स्तर पर भी उतना ही जीवंत और प्रखर है।

## संदर्भ-सूची–

1. राय, विभूतिनारायण. घर. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1986.
2. राय, विभूतिनारायण. शहर में कर्फ्यू. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1988.
3. राय, विभूतिनारायण. तबादला. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1990.
4. राय, विभूतिनारायण. किस्सा लोकतंत्र. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1993.
5. राय, विभूतिनारायण. प्रेम की भूत-कथा. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
6. नामवर सिंह. उपन्यास और लोकतंत्र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1995.
7. शिवकुमार मिश्र. प्रगतिशील साहित्य-चिंतन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2000.
8. रामचंद्र तिवारी. हिन्दी का गद्य-साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2002.


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

9. विश्वनाथ त्रिपाठी. हिन्दी कथा-साहित्य: परंपरा और प्रयोग. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2004.
10. मधुरेश. हिन्दी उपन्यास का विकास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2003.
11. सुरेश शर्मा. समकालीन हिन्दी उपन्यास. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी, 2006.
12. सिंह, कमला प्रसाद. विभूतिनारायण राय: रचना और दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2005.


© Copyright @ Authors